Biyani's Think Tank

Concept based notes

Hindi Teaching

(B.Ed.)

Arti Sharma, Malti Sexena
Lecturer
Deptt. of B. Ed.
Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

For more detail: - http://www.gurukpo.com

Published by :
Think Tanks
Biyani Group of Colleges

Concept & Copyright :
©Biyani Shikshan Samiti
Sector-3, Vidhyadhar Nagar,
Jaipur-302 023 (Rajasthan)
Ph : 0141-2338371, 2338591-95 • Fax : 0141-2338007
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website :www.gurukpo.com; www.biyanicolleges.org

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept in is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

Leaser Type Setted by :

Biyani College Printing Department

For more detail: - http://www.gurukpo.com

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the undamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

Get Instant Access to Your Study Related Queries.

विषय :– हिन्दी

पाठयक्रम

इकाई –1

1. भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप वर्ण, शब्द, एवं वाक्य
2. भाषायी कौशल–

   क. श्रवण ख. उच्चारण ग. वर्तनी घ. वाचन

   सस्वर एवं मौन ड़ अभिव्यक्ति मौखिक एवं लिखित
3. मातृभाषा राष्ट्aaभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण
4. पुस्तकालय एवं वाचनालय
5. मातृभाषा का अन्य विषयों के साथ समन्वय

इकाई–2

1. मातृभाषा और उसका महत्व
2. मातृभाषा शिक्षण के उद्वेश्य
3. मातृभाषा शिक्षण के सिद्वान्त
4. कक्षा शिक्षण के सिद्वान्त

इकाई – 3

1. गघ शिक्षण 2. पघ शिक्षण 3. नाटिका शिक्षण
4. कहानी शिक्षण 5. रचना शिक्षण 6. व्याकरण शिक्षण
2. हिन्दी शिक्षण में दृश्य श्रव्य उपकरणों का महत्व एवं उपयोग
3. हिन्दी भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तक का महत्व

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

इकाई–4

हिन्दी शिक्षण में निम्नलिखित विधियों का ज्ञान एवं उपयोग तथा प्रथम तीन के पाठ प्रारूप

क. प्रायोजना विधि

ख. पर्यवेक्षित अध्ययन विधि

ग. अभिक्रमित अनुदेशन

घ. क्षेत्रीय भ्रमण

ड़ कम्प्यूटर

च. दूरदर्शन

घ. भाषा प्रयोगशाला

इकाई–5

हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन

क. मूल्यांकन का अर्थ एवं विशेषताएँ

ख. पाठान्तर्गत, पाठोपरान्त मूल्यांकन

ग. प्रश्न पत्र निर्माण एवं नील पत्र

घ. प्रश्नों के विभिन्न प्रकार एवं रचना

ड. भाषा शिक्षण संबधी विषय–वस्तु का विश्लेषण

च. पाठ योजना निर्माण एवं प्रकार

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

इकाई –1

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

**प्रश्न : वर्ण किसे कहते है \ हिन्दी वर्णमाला में स्वर कितने होते है, उनके उच्चारण स्थान लिखिए. **

उत्तर : अक्षर समूह का दूसरा नाम वर्ण है। वर्ण का अर्थ है वर्ण, रंग, रूप समस्त अक्षर समूह दो वर्गो में वर्गित है।

1. स्वर 2. व्य™जन

जिन अक्षरों का उच्चारण फेफड़ों से अनुस्फुटित होकर, कण्ठ से झंकारता हुआ तथा मुखावरोध से सर्वथा मुक्त रहता हुआ, नासिका द्वारा अभिव्यक्त होता है, उन्हें स्वर कहते है। प्रत्येक स्वर स्वरोच्चारण में सर्वथा स्वतंत्र है।

अक्षर वर्ण – अक्षर वर्ण दो भागों में विभक्त है स्वर तथा व्य™जन हिन्दी वर्णमाला के अनुसार स्वर दो प्रकार के होते है

1. हस्व 2. दीर्घ इन स्वरों की संख्या 13 है।

हस्व	दीर्घ
अ	आ
इ	ई
उ	ऊ
ऋ	ॠ
ल	ए
	ऐ
	ओ
	औ

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

स्वरों के उच्चारण स्थान निम्न है।

स्वर वर्ण	उच्चारण स्थान
अ, आ	कण्ठ
इ, ई	तलु
उ, ऊ	ओष्ठ
ऋ, ॠ	मूर्धा
ऌ	दन्त
ए ऐ	कण्ठ – तालु
ओ, औ	कण्ठोष्ठ

प्रश्न : वाक्य से क्या अभिप्राय है \ भाषा में वाक्य का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वाक्य दो या दो से अधिक शब्दों की एक ऐसी नियमबद्व एवं अर्थपूर्ण प्रस्तुति है जिससे किसी भाव अथवा विचार की पूर्णता स्पश्ट होती है।

वाक्य प्रायः सार्थक शब्दों के समूह को कहते है। मनुष्य अपने विचारो को वाक्य में ही प्रकट करता है।

वाक्य ऐसे ध्वनि समूह को कहते है जिसमें भाव एवं विचार की पूर्णता स्पष्ट होती है। वाक्य एक शब्द से लेकर दस बीस शब्दों के हो सकते है। जैसे हॉ, ना, आइए, जाइए, मै पढ रही हूॅ आदि।

वाक्य की परिभाषॉए–

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

पातन्जलि के अनुसार, पूर्ण अर्थ की प्रतीति करने वाले शब्द समूह को वाक्य माना जा सकता है।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार, अर्थमान ध्वनि समुदाय जो पूर्ण कथन अथवा भाव की तुलना में अपूर्ण होते हुए भी अपने में पूर्ण हो तथा जिसमें परोक्ष या अपरोक्ष रूप में क्रिया का भाव हो, वाक्य कहलाता है।

भारतीय आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में योग्यता, आसक्ति और आकांक्षा से युक्त पदो ंके समूह को वाक्य कहते है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रत्येक वाक्य में अर्थ और भाव का सामंजस्य होना चाहिए तभी वाक्य अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण होगा।

भाषा में वाक्य का महत्वः– भाषा वाक्यात्मक है, वाक्य शब्दात्मक है और शब्द ध्वनि से अथवा ध्वनि संकेतो अर्थात अक्षरों से बनते है। वाक्यों द्वारा ही विचार विनिमय किया जाता है, अतः वाक्य ही भाषा में सबसे अधिक स्वाभाविक और महत्वपूर्ण अंग है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि–

1. भाषा की सहज या प्रमुख इकाई वाक्य ही है।
2. वाक्य वह कहलाता है जो व्याकरणिक प्रक्रिया से पूर्ण है।
3. वाक्य के लिए कम से कम एक क्रिया अवश्य होनी चाहिए।
4. वाक्य विचार की इकाई है।

प्रश्न : विराम कितने प्रकार के होते है \ प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

उत्तर : किसी भी भाषा को जब हम बोलते है तो कभी शब्दों वाक्यांशों अथवा वाक्यों के पश्चात कुछ ठहरना पड जाता है, तो इसी ठहराव को ही विराम कहते है। लिखते समय ठहरने के स्थान पर जिस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है उसे विराम चिन्ह कहते है।

1. अल्प विराम – वाक्य में जिस स्थान पर थोड़ा ठहरा जाता है वहॉ अल्प विराम का प्रयोग होता है। जैसेः– गांधीजी सत्य, अहिंसा और परोपकार के पुजारी थे।
2. अर्द्व विराम :– वाक्य में जिस स्थान पर अल्प विराम की अपेक्षा अधिक ठहरा जाता है, वहॉ अर्द्व विराम लगााया जाता है। जैसेः– मैं आपके साथ अवश्य चलता, परन्तु अस्वस्थ हूॅ।
3. पूर्ण विरामः– वाक्य जहॉ समाप्त हो जाता है वहॉ पूर्ण विराम लगाया जात है। जैसे दिल्ली भारत की राजधानी है।
4. प्रश्नवाचक चिन्हः– जब किसी से प्रश्न किया जाता है तो इस चिन्ह का प्रयोग करते है।

   तुम क्या कर रहे हो \

5- विस्मयादिबोधक चिन्हः– जब किसी वाक्य में हर्ष, दुखः या आश्चर्य का भाव प्रकार होता है तब यह चिन्ह लगाया जाता है। अरे ! यह तो स्वर्ग सा सुन्दर नगर है।

प्रश्नः मातृभाषा के महत्व की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

उत्तरः जिस प्रकार माता और मातृभूमि के सम्मुख हमारा मस्तष्क श्रद्वा से नत हो जात है उसी प्रकार मातृभाषा भी वन्दना के योग्य है। बालक जितनी कुशलतापूर्वक स्वाभाविक ढंग से मातृभाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है उतना और किसी भाषा के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करने और समझने की सामर्थ्य नही रखता। बालक चाहे जितनी भाषायें सीख ले किन्तु जीवन की सरसता एवं पूर्णता की अनुभूति उसे मातृभाषा ज्ञान के बिना नही हो पाती।

शिक्षा का मुख्य आधार मातृभाषा शिक्षण है। मातृभाषा के माध्यम से यदि पढाया जाये तो शिक्षक के लिए विषय – वस्तु का प्रस्तुतीकरण व स्पष्टीकरण सरल होता है। मातृभाषा के सफल शिक्षण द्वारा सामाजिक एकता के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। मातृभाशा के माध्यम से विचार विनिमय, वैचारिक सम्पर्क बढ़ेगा समस्त सामाजिक प्राणी एक दूसरे के विचारो को समझेगें विचारों में प्रौढ़ता विचार विनिमय व सम्पर्क से आती है। मातृभाषा ज्ञान पर बालकों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास किसी सीमा तक निर्भर करता है। बालकों के बौद्विक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में उसकी भाशा क्षमता का बहुत बड़ा हाथ होता है। बालकों के संवेगो, स्थायी भावों आदि का उनकी मातृभाषा से धनिश्ठ सम्बन्ध होता है। अतः बाल मनोविज्ञान के प्रधान साधन मातृभाशा की शिक्षा का उनकी शिक्षा में सर्वोच्च स्थान होना नितान्त न्यायपूर्ण है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। मातृभाषा में लिखा हुआ साहित्य वास्तव में जातीय संस्कृति, सभ्यता, रीति – रिवाजों और कार्यकलापों का दर्पण होता है जिससे हमारे ज्ञान भण्डार में वृद्वि होती रहती है और यह क्रम निरन्तर जारी रहता है ताकि बालक अपने पूर्वजों के विचारों तथा रीति–रिवाजों का परिचय प्राप्त कर सके। व्यवहारकुशल बनने के लिए मातृभाषा का समुचित ज्ञान आवश्यक है।

विघालय छोड़कर चले जाने पर यह आवश्यक है कि विघार्थी सम्भाशण की कला में निपुण हो। उसे शुद्व बोलना, लिखना, पढ़ना आ सके तभी लोक व्यवहार चल सकता है अन्यथा नहीं। मातृभाषा विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन है क्योंकि बालक जितनी सरलतापूर्वक और बिना प्रयास के मातृभाषा में अपने भावों और विचारों को व्यक्त कर सकता है उतना अन्य किसी भाषा

में नहीं, क्योंकि मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे अपने परिवार एवं समाज में अनुकूल वातावरण प्राप्त हो जाता है।

**प्रश्न : मातृभाषा शिक्षण में भाषायी कौशलों का विकास किस क्रम में करना चाहिए **

उत्तरः– भाशा अर्जित सम्पत्ति है, अर्थात इसे सम्पर्क, अनुकरण एवं अभ्यास से सीखा जा सकता है। प्रत्येक बालक भाषा सीखता है। वयस्कों द्वारा भाशा को बोलते हुए सुनता है। बालक सुनकर ही बोलना सीखता है। मानसिक प्रक्रिया द्वारा हम बोलते है, सुनते और पढ़ते है और लिखते है।

भाशा कौशल के चार अंग है।

1. सुनना और समझनाः– प्रत्येक बालक भाषा सीखता है। वयस्कों द्वारा भाषा सीखता है। वयस्कों द्वारा भाशा को बोलते हुए सुनता है और प्रारम्भ में अनुकरण द्वारा कभी–कभी क्रियाविहीन वाक्य बोलने लगता है वास्तव में ये भाषा–ज्ञान एक शब्द ज्ञान से ही प्रारम्भ हो जाता है। प्रत्येक विधार्थी में सुनने की क्षमता का विकास अत्यन्तावश्यक है। प्रजातन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति के विचार बहुमूल्य है। प्रत्येक व्यक्ति के विचारो का आदर होना चाहिए जिसके लिए वैचारिक स्तर पर उदारता व सहिष्णुता का गुण आवश्यक है।
2. बोलनाः– बालक सुनकर ही बोलना सीखता है अतः भाषा शिक्षण उस स्वाभाविक विधि के अनुसार ही होना चाहिए। मौखिक कार्य से ही भाषा शिक्षण प्रारम्भ होता है, बालक वयस्कों के सम्पर्क में आकर अनुकरण द्वारा सुन सुनकर बोलना सीख जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा बालक को विचारभिव्यक्ति व भावाभिव्यक्ति के सुअवसर प्राप्त हो जाते है। आत्म प्रकाशन का पूरा अवसर मिलता है। मनुष्य एक सामाजिक

प्राणी है। समाज में रहकर सफल जीवनयापन हेतु यह अत्यन्तावश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति युक्ति पूर्वक बोल सके। प्रसिद्व लेखक बेकन ने कहा है सम्भाषण की कला में प्रवीण व्यक्ति ही तत्पर बुद्वि वाला व्यक्ति बन सकता है।

3. पढ़ना :– पढ़ना भाषा के लिखित रूप पर आधारित है। मातृभाषा बोलने वाला पहले बोलना सीखता है फिर पढ़ना। पढ़ने के लिए सस्वर वाचन एवं मौन वाचन का प्रयोग किया जाता है।
4. लेखन अभिव्यक्ति :– इस कौशल के अन्तर्गत लिखना सीखना व लिपि चिन्हों और सही वर्तनी के उपयोग से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना है। अपने भावों की अभिव्यक्ति कलम से करना ही लेखन कौशल है।

**प्रश्नः सस्वर वाचन की विशेषताएँ बताइये **

उत्तर जब एक से अधिक व्यक्तियों का समूह एक साथ एक स्वर में वाचन करता है, उसे समवेत वाचन कहते है। सस्वर वाचन का तात्पर्य है स्वरो का उच्चारण करते हुए पढ़ना। सस्वर वाचन को निम्नलिखित विशेषताएँ है।

1. अक्षर व्यक्ति :– इसको स्पष्ट अक्षरोच्चार भी कहा जाता है। अर्थात एक एक अक्षर को शुद्व तथा स्पष्ट रीति से उचित स्वराघात व बलाघात व सन्धियोजन के साथ उच्चारित करना।
2. शब्दोच्चारणः– अर्थात प्रत्येक शब्द को शुद्व तथा स्पष्ट रूप से उच्चारित करना।
3. उचित ध्वनि–निर्गमः– अर्थात मुँह के भीतर के स्थान से वर्णो का उच्चारण करना। मुख के अन्तर्गत समस्त उच्चारणोपयोगी अवयवों का

ज्ञान शिक्षक को होना चाहिए कि किस वर्ण या ध्वनि का उच्चारण किस उच्चारण अवयव से करना उचित है।

4. बलः– प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से पृथक करते हुये उचित बल के साथ सस्वर वाचन करने से वाचन कही अधिक प्रभावशाली हो जाता है।
5. विरामः– शिक्षक को चाहिए कि वे बालकों को इसकी शिक्षा दे कि सस्वर वाचन करते समय यदि पूर्ण विराम है तो थोड़ा अधिक रूककर पढ़ें यदि अर्द्धविराम है तो वहॉ कुछ कम रूककर प्रवाह के साथ पढ़े।
6. सुस्वरता स्वर माधुर्यः– भावों और विचारों के अनुसार वाक्य के शब्दों को उतार–चढ़ाव के साथ सुमधुर वाणी में पढ़ना, पढ़ते समय स्वर की मधुरता बनी रहे, एक – एक अक्षर स्पष्ट सुनाई दे सके। स्वर सामान्य होना चाहिए न अधिक उच्च और न अधिक धीमा।
7. उचित गति– पढ़ने की गति न अधिक तीव्र हो न अधिक मन्द दोनों ही असामान्य स्थितियों से बचना चाहिए। वाचन में प्रवाह अत्यन्त आवश्यक है।
8. प्रभावोत्पादकताः– यदि स्वर में एकरसता का अवगुण पाया जायेगा कही उतार–चढ़ाव न होकर एक से स्वर से पढ़ते जाना या झटके के साथ प्रत्येक वाक्य के अन्तिम शब्द को पढ़ना या लयात्मक स्वर में गघांश का वाचन किया जायेगा तो वाचन लेशमात्र भी प्रभावशाली न हो सकेगा।
9. वाचन मुद्राः– वाचन करते समय वाचक की मुद्रा ठीक होनी चाहिए। पुस्तक को वाये हाथ से केवल एक हाथ से इस प्रकार पकड़ना चाहिए कि पुस्तक बिल्कुल सामने रहकर थोड़ी बाई ओर की तरफ ही हो,

पुस्तक के बीच के मोड़ पर अंगूठा आ जाये। वाचन करते समय व्यर्थ में इधर–उधर घूमना नही चाहिए। वाचन के समय वाचक की दृष्टि सदैव पुस्तक में ही नही जाम रहनी चाहिए। वाचक को अपनी दृष्टि परिधि इस प्रकार साथ लेनी चाहिए कि वह पढ़ते–पढ़ते श्रोता समुदाय की ओर यदाकदा दृष्टि डाल सके।

**प्रश्नः–आप कक्षागत स्थिति में वर्ण एवं शब्द को किस प्रकार परिभाषित कीजियेगा **

उत्तर :– वर्ण– शब्दों की अलग इकाई जिनके खण्ड न हो सकें, वे छोटी से छोटी मूल ध्वनियॉ वर्ण कहलाती है। वर्णो का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से नहीं हो सकता, इन्हें केवल लिखा जा सकता है।

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त वर्णमाला के वर्णों को दो वर्ण समूहों में विभाजित किया गया है स्वर तथा व्य™जन 1 हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 है। जिनमें मुख्य स्वर 4 चार है। अ,इ,उ,ऋ इन्हें हस्व स्वर कहते है। तीन, दीर्ध स्वर हैं। आ, उ, ई आदि तथा 4 संधि स्वर है। ए, ऐ, ओ, औ।

सामान्यतः हिन्दी में 36 वर्ण माने जाते है। जो इस प्रकार है क वर्ग 5 वर्ण, च वर्ग 5 वर्ण, ट वर्ग 5 वर्ण, त वर्ग 5 वर्ण, प वर्ग 5 वर्ण, इन पॉचों वर्गों के वर्ण स्पर्श व्य™जन कहलाते है। जिनकी संख्या 25 है। य,र,ल,व, ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते है। स,श,श,ह ये चार वर्ण आम कहलाते है। क्ष, त्र, ज्ञ, ये तीन वर्ण संयुक्ताक्षर है। इस प्रकार कुल मिलाकर 36 व्य™जन है।

शब्दः– भाशा के निर्माण में अक्षर एवं ध्वनियों का विशेश महत्व है। व्याकरण में एक या एक से अधिक अक्षरों से बनी स्वतंत्र तथा सार्थक ध्वनि को शब्द

कहते है। जिसके अपने स्वतंत्र रूप में अथवा किसी वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक निश्चित अर्थ की प्रतीति होती है।

शब्द भाषा के प्राण होतें हैं। शब्दों के अभाव में भाशा की कल्पना नहीं की जा सकती।

कक्षा में वर्ण एवं शब्द को उदाहरण एवं विश्लेशण पद्वति द्वारा स्पष्ट करेंगे।

शब्द	विश्लेशण
निडर	न + इ + ड् + अ + र + अ
परीक्षा	प् + अ + र् + ई + क् + ा + आ
विक्रम	व + इ + क् + अ + र + अ + म् + अ

इसी प्रकार कुछ शब्दों की तालिका बनाकर शब्दों एवं वर्णो का बोध कराया जा सकता है।

प्रश्नः– हिन्दी भाषा शिक्षण में मौन वाचन के उद्वेश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः– लिखित सामग्री को मन ही मन में शान्तिपूर्वक बिना उच्चारण किए पढ़ने को मौन वाचन कहते हैं। मौन वाचन करते समय पढ़ने वाला किसी प्रकार की आवाज नहीं निकालता।

मौन वाचन के उद्वेश्य निम्नलिखित है–

1. छात्रों को बिना स्वरोच्चारण के शीध्रता से पढ़ना सिखाना।
2. नेत्रों की गति–प्रत्यागति तथा विचारों के संक्रमण में सामन्जस्य स्थापित करना।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

3. छात्रों की परिचित शब्दावली को सक्रिय शब्दावली में परिवर्तित करने के लिए अभ्यास के अवसर प्रदान करना।
4. चिंतन एवं अवधान शक्ति को एकाग्र करने का प्रशिक्षण प्रदान करना।
5. वाचन की तीव्रता के साथ विचार–ग्रहण की शीध्रता का अभ्यास कराना।
6. छात्रों को स्वाध्याय की कला में प्रशिक्षित करना। उन्हें इस योग्य बनाना कि वे वाचनालयों, पुस्तकालयों, बसों, रेलगाड़ियों एवं किसी अन्य व्यक्ति के घर पर बैठकर खाली समय का सदुपयोग कर सकें।
7. छात्रों की विभिन्न विषयों को पढ़ने की रूचि उत्पन्न करना।
8. छात्रों के ज्ञान की परिधि को विस्तृत बनाना।
9. छात्रों की तीव्र गति से पढ़ने की क्षमता का निर्माण करना।
10. विभिन्न मानसिक शक्तियों का विकास करना।

प्रश्नः– लेखन कला को कुशल बनाने में अनुलिपि सुलेख और श्रुतलेख के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः– लेखन शिक्षा का अर्थः– जब हम अपनी भावनाओं को विचारों को, अनुभूतियों को लिपिबद्व करके भाशा को स्थायित्व प्रदान करते है। उसे ही लेखन कहते है।

अनुलेखः– अनुलेख का अर्थ है– किसी आदर्श लिखावट का जैसे के वैसा अनुकरण करना। इस लेख में अध्यापक छात्रों के सामने लेखन का एक आदर्श रखते है और उसके द्वारा उसकी अनुकृति करने की आज्ञा दी जाती है। आजकल इस पद्वति के लिए मुद्रित पुस्तिकाएँ है, जिनमें प्रथम पंक्ति लिखी हुई रहती है, और उसके नीचे उसी प्रकार लिखने के लिए रिक्त स्थान

दिया हुआ रहता है, उसी स्थान में उक्त शब्दों का, वाक्यों का अनुकरण करने का यत्न करते है।

सुलेखः– सुलेख का अर्थ है– सुन्दर लेख लेखन में सुन्दरता का होना महत्वपूर्ण माना जाता है। बालक का लेखन सुवाच्य होने के लिए प्रारम्भिक कक्षाओं से ही अध्यापकों को सही ध्यान देना चाहिए। बुरी लिखावट को अपूर्ण शिक्षा का अंग माना जाता है। सुलेख सुशिक्षित व्यक्ति की सर्वप्रमुख पहचान है। इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रकाशमान होता है और समाज में उसे प्रतिष्ठा, मान, सम्मान प्राप्त हो जाता है। दाहिने हाथ की प्रथम तीन उँगलियों से लेखनी की नोंक से 3/4 इंच उपर पकड़कर सरलता से लिखने का अभ्यास दिया तो लेखन निश्चित ही सुन्दर हो सकता है।

समय–समय पर अध्यापकों को छात्रों की त्रुटियों का निराकरण करके उन्हें सुलेख के प्रति प्रेरणा देनी चाहिए।

श्रुतलेखः– श्रुतलेख का पर्याय है– सुनकर लिखना यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें अध्यापक बोलते जाते है। और छात्र तेज गति से लिखते जाते है। जब बालक अनुलेख तथा प्रतिलेख में कुशलता प्राप्त करता है तब श्रुतलेख का अभ्यास करना चाहिए। आधुनिक युग में श्रुतलेख को ग्रामोफोन तथा टेपरिकॉर्डर से भी निम्न प्रकार है।

1. इससे छात्रों को सुनकर भाशा समझने और लिखने का अवसर प्राप्त हो जात है।
2. सावधानी से सुनने की आदत पड़ जाती है।
3. लेखन की गति बढ़ जाती है।
4. अक्षर विन्यास को शिक्षा मिलती है।
5. विराम चिन्हों का ठीक उपयोग करना सीखते है।

6. सुन्दरता, स्पष्टता, शुद्वता का अभ्यास मिलता है।

प्रश्नः– हिन्दी शिक्षक के प्रमुख गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः– हिन्दी शिक्षक के प्रमुख गुण निम्नलिखित है।

1. साहित्य के प्रति अनुरागः– हिन्दी शिक्षक का साहित्य के प्रति अनुराग नही होना व स्वयं की रूचि साहित्य अध्ययन में नहीं होगी तो ऐसा अध्यापक साहित्य के प्रति विघार्थियों की रूचि जाग्रत नही कर सकेगा। साहित्य के प्रति अनुराग रखने वाला शिक्षक ही साहित्य प्रवेश सफलतापूर्वक करवा सकेगा।
2. विस्तृत अध्ययनः– हिन्दी शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि अध्ययन विस्तृत हो ताकि प्रसंगाानुकूल समान्तर उद्वरण देकर विषय को रोचक व बोधगम्य बना सके। साहित्य का अध्यापन सफलता पूर्ण तभी हो पाता है जबकि शब्द चयन अच्छा हो व प्रंसंगानुकूल तथ्यों को उद्धृत किया जा सके।
3. सशक्त अभिव्यक्तिः– साहित्य अध्यापन का सम्बन्ध सशक्त, मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति से है। चाहे विचाराभिव्यक्ति हो अथवा भावाभिव्यक्ति। जिस शिक्षक को अभिव्यक्ति प्रभावशाली नही, वरन् वह सफल मातृभाशा विचारों तथा भावों के साथ–साथ अभिव्यक्ति से है।
4. मनोविज्ञान का पारखीः– हिन्दी शिक्षक को मनोविज्ञान का पारखी होना चाहिए ताकि जीवन से उदाहरण स्तरानुकूल व अवस्थानुसार प्रस्तुत कर सके व मनोभावों का उदातीकरण कुछ विशेश स्थलों को पढ़ाते समय कर सके।

5. भावानुकूल वाचनः– शिक्षक द्वारा किया गया आदर्श पाठ वास्तव में आदर्श ही होना चाहिए। भावानुकूल स्वर में उतार चढ़ाव के साथ किया गया आदर्श वाचन सफल शिक्षण में सहायक होता है।
6. प्रभावशाली प्रवचनः– हिन्दी शिक्षक का प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली होना चाहिऐ ताकि अपने सशक्त प्रवचन द्वारा वह सजीव वर्णन प्रस्तुत कर सके, व्याख्या कर सके व सरल भाशा में विघार्थी को उसके स्तर के अनुसार समझा सके वही शिक्षक सफल है जिसकी बात विघार्थी समझ ले।
7. अन्य विषयों की जानकारीः– मातृभाशा के शिक्षक में सामान्य ज्ञान इतना होना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक में यदि कोई तथ्य अन्य विषय से सम्बन्धित आ जाये उसको वो सफलतापूर्वक समझाा सके।
8. सदव्यवहारः– हिन्दी शिक्षक का दृष्टिकोण उदारता, सहिश्णुता व सहयोग से अनुप्राणित होना चाहिए ताकि विघार्थी भी उच्चकोटि के जीवन मूल्यों को अपने जीवन में स्थान दे सकें। शिक्षक के संकुचित, अनुदार व साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का कुप्रभाव विघार्थियों पर भी पड़ जाता है। अतः साहित्य शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह अपने सद्व्यवहार द्वारा विघार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार द्वारा विघार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार द्वारा विघार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार द्वारा विघार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार द्वारा विघार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार के मूल्य को उचित स्थान देने की प्रेरणा दे।

9. कुशल प्रबन्ध कर्ताः– प्रत्येक हिन्दी शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विघालय में बालसभा के अन्तर्गत या हिन्दी समिति के अन्तर्गत साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करे ताकि मातृभाशा ध्यापन के चारों उद्वेश्यों की प्राप्ति हो सके।

प्रश्नः– विघालयी पुस्तकालय में भाषा–विषयक सन्दर्भ सामग्री का वर्णन कीजिए तथा पुस्तकालय की उपयोगिता बताइये।

उत्तरः– बी.आर.एफ.कैली– पुस्तकालय ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं ताकि कुछ भी खो न जाये। ज्ञान को संगठित रखते है ताकि कुछ भी व्यर्थ न चला जाए और ज्ञान को प्राप्त बनाते है ताकि कोई भी उससे वंचित न रहे।

विघालयी पुस्तकालय में भाशा – विशयक सन्दर्भ सामग्री

पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की पुस्तकों के पृथक–पृथक अनुभाग होने चाहिए, जैसे भाशा एवं साहित्य, भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान, गणित, वाणिज्य, गृहविज्ञान, आदि। हिन्दी भाशी प्रदेशों के माध्यमिक विघालयों में हिन्दी भाशा एवं साहित्य की पुस्तकों की संख्या ही अधिक होती है। इन पुस्तकों को भी विषयों एवं विधाओं के अनुसार व्यवस्थित रीति से पृथक पृथक रखना चाहिए जिसे वे सरलतापूर्वक प्राप्त हो सकें। ये विभाजन इस रूप में हो सकते हैं– कोश, सन्दर्भ पुस्तकें, व्याकरण एवं भाशा शास्त्र, सहायक पुस्तकें, बाल साहित्य, काव्य, निबन्ध, आलोचना, भाशा एवं साहित्य के इतिहास, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी संस्करण, रेखाचित्र तथा अन्य सामान्य पुस्तकें।

पुस्तकालय की उपयोगिताः– विघालय में किसी भी विषय के अध्ययन के लिए हमें एक ऐसे स्थान की आवश्यकता होती है, जहॉ का वातावरण शांत,

एकांतप्रिय एवं स्वतंत्र हो और जहॉ शुद्व हवा एवं उचित प्रकाश की व्यवस्था हो। अतः पुस्तकालय का हमारे अध्ययन एवं जीवन में बहुत महत्व है।

अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्त सामग्री एवं विभिन्न रचनाकारों के प्रमुख ग्रन्थों के अध्ययन की सुविधा हमें पुस्तकालय में ही उपलब्ध हो पाती है। पुस्तकालय का सबसे अच्छा उपयोग हमारे अवकाश के समय का सदुपयोग करना है। पुस्तकालय कमजोर एवं निर्धन छात्रों की कठिनाइयों को दूर करने का अच्छा साधन है। पुस्तकालय से हमें अघतन ज्ञान की जानकारी मिलती है क्योंकि इसमें नवीनतम ज्ञान से सुसज्जित पत्र–पत्रिकाएँ उपलब्ध रहती है।

Send your requisition at
info@biyanicolleges.org

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

For more detail: - http://www.gurukpo.com